Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 05/January/2024 **IJRAW:** 2024; 3(2):60-62 **Accepted:** 08/February/2024

शास्त्रीय नृत्य में भाव एवं भंगिमा

*[1]डॉ. जितेश गढ़पायले

*[1]सहायक प्राध्यापक, कत्थक नृत्य विभाग, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ, भारत।

सारांश

भारतीय नृत्यकला का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, शास्त्रों, वेद व पुराणों में भंगिमा के सिद्धान्तों की पुष्टि करता है। शास्त्रीय नृत्य के तत्वों में भंगिमा के तत्वों का व्यापक आयाम दृष्टिगोचर होता है जो कि शास्त्रीय नृत्य के आध्यात्म पक्ष को प्रबल और समृद्ध बनाता है। भंगिमा व भाव शास्त्रीय नृत्य कला में शाश्वत विचारों के साथ–साथ युगधर्मी विचारधारा का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। शास्त्रीय नृत्य में प्रयुक्त होने वाले नृत्त व नृत्त्य के समस्त पक्ष भाव एवं भंगिमा में धरोहर के रूप में विद्यमान है। परम्परागत शास्त्रीय नृत्य की अभिव्यक्ति में कलाकार द्वारा मुद्राओं बिम्ब, प्रतीक, रेखा, ताल–लय, गति, रस–भाव अभिनय, अंग, प्रत्यंग एवं उपांगों का सहारा लेकर भंगिमा को प्रदर्शित किया जाता है जिसका आलौकिक आनंद व सौन्दर्य की कलात्मक अनुभूति कलाकार व दर्शकगणों को होती है। यही अनुभूति ऐन्द्रिय संवेदना को तरंगित कर भाव–भंगिमा की समीक्षा करती है। फलतः शास्त्रीय नृत्य भंगिमा की अनिवार्य शर्तों से मुखरित होती है। शास्त्रीय नृत्य शरीर, आध्यात्म, ऐन्द्रिय संवेदनाओं बौद्धिक, ताल–लय, अभिनय, रस–भाव व बंदिशों के सौन्दर्य का सामंजस्य है जो दृश्य का श्रव्य की चरम पराकाष्ठा में अनेक नवीन प्रयोग को जन्म देने की एक सीढ़ी है। शास्त्रीय नृत्य में अभिनय एवं रस–सिद्धान्त कालान्तर से ही अपने आप में समृद्ध और सुसज्जीत है, जिसमें 'रसो वै सः' की सम्पूर्णता व सौन्दर्य को गहराई से विश्लेषण किया है। शास्त्रीय नृत्यों कि विशेषता ही रही है कि नृत्य अपने में अनेक सौन्दर्यमयी भंगिमाओं की अनुभूति के साथ सौन्दर्य रूपी भंगिमा के सांचे में ढल जाता है। भंगिमा को करण एवं अंगहारों के सौन्दर्यमयी प्रयोग से इसे सुसज्जित किया जाता है। शास्त्रीय नृत्त्यों में भंगिमा शारिरिक सुसंगठन, संतुलन, एकत्व, विविधता, चिरनवीनता, गति, लय, ध्वनि, अलंकार और औचित्य आदि में समाहित विशेष प्रकार का स्थानक या आकृति होती है। शास्त्रीय नृत्य मुख्य रूप से अनुकरण के तत्वों पर ही आधारित एक नृत्य शैली है। जो कि सौन्दर्यशास्त्र के मूल सिद्धान्तों में से एक हैं यह मनोभावों को प्रकट करते हुए सहृदय के मन में रसोत्पत्ति उत्पन्न करता ह।

मुख्य शब्दः भंगिमा अंगों की गति, भावों की सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति, कथानक, आंगिक, वाचिक, आहार्य व सात्विक अभिनयों के लक्षण से ओत–प्रोत, गीतं, वाद्यम् तथा नृत्यंत्रयम्, लय–ताल से आबद्ध आंगिक अनुशासनात्मक।

प्रस्तावना

शास्त्रीय नृत्यों कि श्रृंखला में भंगिमा जटिल व विविध आयामों से जुड़ी विशेष आकृति है, जो कि प्रत्येक शास्त्रीय नृत्य की पहचान व अपने नृत्य शैली की विशेषता, स्थान परम्परा के अनुसार शास्त्र सम्मत होता है। जिसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अनेक प्रयोग एवं संभावना से परिपूर्ण होती है। भंगिमा का समस्त ललित कलाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिसमें भारतीय नृत्यकला का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, शास्त्रों, वेद व पुराणों में भंगिमा के सिद्धान्तों की पुष्टि करता है। शास्त्रीय नृत्य के तत्वों में भंगिमा के तत्वों का व्यापक आयाम दृष्टिगोचर होता है जो कि शास्त्रीय नृत्य के आध्यात्म पक्ष को प्रबल और समृद्ध बनाता है। भंगिमा व भाव शास्त्रीय नृत्य कला में शाश्वत विचारों के साथ–साथ युगधर्मी विचारधारा का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। शास्त्रीय नृत्य में प्रयुक्त होने वाले नृत्त व नृत्त्य के समस्त पक्ष भाव एवं भंगिमा में धरोहर के रूप में विद्यमान है। शास्त्रीय नृत्य के तत्वों का विश्लेषण, भंगिमा के जटिल शास्त्रगत एवं वैज्ञानिक

***Corresponding Author:** डॉ. जितेश गढ़पायले

प्रक्रियाओं का सकारात्मक और आध्यात्मिक विषयों के आधार गत सिद्धान्तों के आधार पर विश्लेषीत किया जाता है। परम्परागत शास्त्रीय नृत्य की अभिव्यक्ति में कलाकार द्वारा मुद्राओं बिम्ब, प्रतीक, रेखा, ताल–लय, गति, रस–भाव अभिनय, अंग, प्रत्यंग एवं उपांगों का सहारा लेकर भंगिमा को प्रदर्शित किया जाता है जिसका आलौकिक आनंद व सौन्दर्य की कलात्मक अनुभूति कलाकार व दर्शकगणों को होती है। यही अनुभूति ऐन्द्रिय संवेदना को तरंगित कर भाव–भंगिमा की समीक्षा करती है। फलतः शास्त्रीय नृत्य भंगिमा की अनिवार्य शर्तों से मुखरित होती है। शास्त्रीय नृत्य शरीर, आध्यात्म, ऐन्द्रिय संवेदनाओं बौद्धिक, ताल–लय, अभिनय, रस–भाव व बंदिशों के सौन्दर्य का सामंजस्य है जो दृश्य का श्रव्य की चरम पराकाष्ठा में अनेक नवीन प्रयोग को जन्म देने की एक सीढ़ी है। शास्त्रीय नृत्य में अभिनय एवं रस–सिद्धान्त कालान्तर से ही अपने आप में समृद्ध और सुसज्जीत है, जिसमें 'रसो वै सः' की सम्पूर्णता व सौन्दर्य को गहराई से विश्लेषण किया है। शास्त्रीय नृत्यों कि विशेषता ही रही है कि नृत्य अपने में अनेक सौन्दर्यमयी भंगिमाओं की अनुभूति के साथ सौन्दर्य रूपी भंगिमा के सांचे में ढल जाता है। स्वाभाविकता और सौन्दर्य के साथ सजी हुई यह भंगिमा शास्त्रीय नृत्य की अभिव्यक्ति कहलाती है। शास्त्रीय नृत्यों की श्रृंखला में भंगिमा का सौन्दर्यावलोकन अनेक ऐन्द्रिय संवेदनाओं से ओत–प्रोत होता है। शास्त्रीय नृत्य में भंगिमा वैदिक परम्परा से युक्त दार्शनिक दृष्टिकोण में मौलिकता के साथ प्रयुक्त होता है जिसका प्रमुख लक्ष्य आनन्द है। भंगिमा शास्त्रीय नृत्यों की तकनीकी, नृत्त, अंग, प्रत्यंग, उपांग, रेखा, लय, गति, ताल सौन्दर्यात्मक रसानुभूति, शैलीगत विविधता आदि पक्षों पर सकारात्मक और सौन्दर्य शास्त्र के आधारगत सिद्धान्तों पर निर्मित किया जाता है। भंगिमा को करण एवं अंगहारों के सौन्दर्यमयी प्रयोग से इसे सुसज्जित किया जाता है। शास्त्रीय नृत्यों में भंगिमा शारिरिक सुसंगठन, संतुलन, एकत्व, विविधता, चिरनवीनता, गति, लय, ध्वनि, अलंकार और औचित्य आदि में समाहित विशेष प्रकार का स्थानक या आकृति होती है। शास्त्रीय नृत्य मुख्य रूप से अनुकरण के तत्वों पर ही आधारित एक नृत्य शैली है। जो कि सौन्दर्यशास्त्र के मूल सिद्धान्तों में से एक हैं यह मनोभावों को प्रकट करते हुए सहृदय से मन में रसोत्पत्ति उत्पन्न करता है। भाव का संबंध संगीत की तीनों विधाओं से है क्योंकि गायन के आधार पर ही भाव नृत्य किया जाता है फलस्वरूप गायन एवं भाव नृत्य के साथ वादन शैली पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। शास्त्रीय नृत्य का भाव से संबंध ही नहीं वरन अर्तसंबंध है। शास्त्रीय नृत्यों में पुरुष एवं महिला दोनों को समान रूप से स्थान प्राप्त है परन्तु भाव एवं भंगिमा ही है जो पुरुष एवं महिला द्वारा ही शास्त्रीय नृत्य शैली की प्रस्तुति को सफल बनाते है क्योंकि प्रत्येक कलाकार के भाव प्रणयन की क्षमता अद्भूत व सशक्त होती है। निष्कर्षतः प्रस्तुत शोध से यह पक्ष उजागर होता है कि भाव–नृत्य विधा के साथ (गायन एवं वादन) अपनी अनुगामी विधाओं में भी स्वतः स्थान ले लिया है।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य की भंगिमाओं का बोध हमे पुरातन धरोहरो की प्रेरणा से प्राप्त होता है। शास्त्रीय नृत्य में भंगिमा कलाकार के आंतरिक उल्लास व हृदयगत आनन्द की अनुभूति स्वभाविक और चिरन्तन प्रक्रिया है। भंगिमा नृत्य में युगों–युगों से कलाकार जाति की अनमोल विरासत के रूप में विद्यमान हैं। शास्त्रीय नृत्य में भंगिमा प्राचीन से वर्तमान काल तक विकास के अनेक सोपान को पार करते हुए नीत नवीन प्रयोग के माध्यम से आज भी अनुकरणीय है। भंगिमा अंगों की गति, लय व भावों से सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति, नृत्य के द्वारा ही हृदय और मानसिक स्थितियों को तृप्ती प्रदान करता रहा है, अपने हृदय अैर मानसिक स्थितियों की तृप्ती ही आनंद अनुभूति का बोध कराती है। आचार्य भरत मुनि भी सभी कलाओं का उद्देश्य विश्रांति और सुख मानते है। ''सर्वः प्रायेण लोकोऽयं सुखमिच्छति सर्वदा'' [1] अतः भंगिमा शब्द, ताल, लय, बोलो की विविधता, हाव–भाव, मुद्राएँ, रस, अंग, प्रत्यंग, उपांग का सुन्दर हलन–चलन व अभिनय से पूर्ण अनेक साधनों की सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति है। विल्हेम बुल्ट के अनुसार 'आरम्भ में नृत्य ही मानव की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति का साधन था।'' [2] मुख्य रूप देखा जाय तो प्रत्येक कला का लक्ष्य सौन्दर्य ही है जिसे पहचाना जाता है कि वह सुख प्रदान करता है। भंगिमाओं में कलात्मकता विशेष रूप से परिलक्षित होती है कलात्मक सौन्दर्य अच्छा व महत्वपूर्ण इसलिये है क्योंकि वह सुखद है अर्थात् जो सुखद है वही सुन्दर है। शास्त्रीय नृत्यों में सुदर भंगिमा का अवलोकन कर जब उनके तत्वों का विश्लेषण करते है तो सौन्दर्य विज्ञान का आध्यात्म रूप परिलक्षित होता है ''सौन्दर्य शास्त्र सभी ललित कलाओं का शास्त्र है एवं सौन्दर्य शास्त्र मुख्यतः ऐन्द्रिय बोध से प्राप्त सौन्दर्य भावना के मनोमय आनन्द का विश्लेषण करता है [3] अर्थात् भंगिमा में लय, ताल, संयोजन, कथानक, आंगिक, वाचिक, आहार्य व सात्विक अभिनयों के लक्षण से ओत–प्रोत भंगिमा के आत्मगत स्वरूप को विश्लेषित करता है। प्राचीन भारतीय कला साधकों द्वारा कहा गया है ''विश्रान्तिर्यस्य सम्भोगे सा कला न कला मता। लीयते परमानन्दे ययात्मा सा परा कला।'' [4] अर्थात् जिसका उद्देश्य भोग या मनोरंजन है वह कला नहीं है वरन जो परमानन्द में लीन कर दे वही श्रेष्ठ कला है। भंगिमा एक कृति है और कलाकारों की अभिव्यक्ति है। शास्त्रीय नृत्य में भंगिमा की ब्रम्हानन्द अनुभूति निवास करती है जो जीवन के अपार सौन्दर्य से सत्य का प्रकाश है। नृत्यों में भंगिमा को अगर पृथक–पृथक आयामों से अवलोकित करें तो भंगिमा कभी सुन्दर, कभी सत्य व कभी शिव के रूप में प्रतीत होता है। प्लेटो के अनुसार सत्य, शिव व सुन्दर एक है। सुन्दर परम है और पूर्ण है तथा सुन्दर लिए नैतिक होना आवश्यक है।'' [5] शास्त्रीय नृत्य कलामय होने के कारण ही कलाकार अदृश्य में रूप की उपासना और साधक की उपासना निर्गुण में सगुण पर आधारित होती है। निराकार को साकार रूप में

परिचित कराने के लिए कलाकार इन्हीं प्रतिमानों का आश्रय लेकर अपने लक्ष्य को पूरा करता है, यह लक्ष्य है कला द्वारा परमानन्द की प्राप्ति का साधन, अतः जिससे परमानंद की प्राप्ति हो वही श्रेष्ठ कला है। भारत में नृत्य को संगीत कला के अर्न्तगत् एवं संगीत को ललित कलाओं के अर्न्तगत् माना जाता है आचार्य शारंगदेव के अनुसार गीत, वाद्य, नृत्य तीनों ही संगीत के अंश है। ''गीतं, वाद्यम् तथा नृत्यंत्रयम् संगीत मुच्यते'' [6] ''पाश्चात्य कवि हिरोल के अनुसार चित्र संगीत और काव्य के माध्यम से संगीत की अभिव्यक्ति अधिकतम सम्भव है इसलिए इन तीनों को ही रोमान्टिक कला का स्वरूप माना है।[7] शास्त्रीय नृत्य शैलियों में भंगिमा की विशेषता मुख्य रूप से प्रशिक्षण की पद्धति पर भी आधारित होती है जिसमें विलक्षण चपलता परिलक्षित होती है'' [8] जो कि भंगिमा को और अधिक चमत्कृत और आकर्षित करने में सहायक होती है। प्रत्येक शास्त्रीय नृत्य का अपना एक शास्त्रीय स्वरूप है जिसके कुछ निश्चित सिद्धान्त है, अभिन्य की नियमबद्धता है, लय–ताल से आबद्ध आंगिक अभिनयात्मक अनुशासन इसकी प्राथमिकता होती है। ''अंगों कि रचनात्मकता, पूर्ण कलात्मक, रेखाओं, आकृतियों तथा भंगिमाओं का सृजन कथक के सौन्दर्य में वृद्धि कारक होते है'' [9] उप शास्त्रीय नृत्य में भंगिमा के पारम्परिक स्वरूप को आत्मसात करते हुए उन्हें नवीन जीवन संदर्भों से जोड़ने का काम परम्परागत गुरूओं द्वारा किया गया नृत्य जगत को महत्वपूर्ण योगदान है जो उनकी कलात्मक कल्पनाशीलता की ही उपज थी कि उन्होंने कई तरह बंदिशों की रचना कर उसे भंगिमा के माध्यम से एक निश्चित, नाम व पहचान देने की कोशिश की है। बंदिशों एवं भंगिमाओं के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालते हुए व कार्तिकराम लिखते है कि ''यहाँ का कथक राजा चक्रधर सिंह द्वारा प्रणित बंदिशों, भंगिमा का प्रदर्शन विशेष रूप से करता है।'' [10] शास्त्रीय नृत्यों में भंगिमा के सौन्दर्य में नाट्य शास्त्रीय विचारों पर आधारित भंगिमा के सृजन की कल्पना की जाती है। भंगिमा के सौन्दर्यमयी तत्वों को कभी मूर्त से अमूर्त, कभी लौकिक से अलौकिक एवं आनंद के लिए विस्तृत रूप से विवेचित किया जाता है। आनंद ही नृत्य को जन्म देता है और नृत्यकला आनंद में ही समाती है जिसकी अंतिम परिणति है सौन्दर्य और सृजन। जो प्राचीन काल से समसामयिक काल तक अपनी सौन्दर्य छटा को बिखेरते आयी है।

निष्कर्ष

भंगिमा एक कृति है और कलाकारों की अभिव्यक्ति है। शास्त्रीय नृत्य में भंगिमा की ब्रम्हानन्द अनुभूति निवास करती है जो जीवन के अपार सौन्दर्य से सत्य का प्रकाश है। कला द्वारा परमानन्द की प्राप्ति का साधन, अतः जिससे परमानंद की प्राप्ति हो वही श्रेष्ठ कला है। शास्त्रीय नृत्य शैलियों में भंगिमा की विशेषता मुख्य रूप से प्रशिक्षण की पद्धति पर भी आधारित होती है जिसमें विलक्षण चपलता परिलक्षित होती है जो कि भंगिमा को और अधिक चमत्कृत और आकर्षित करने में सहायक होती है। अंगों कि रचनात्मकता, पूर्ण कलात्मक, रेखाओं, आकृतियों तथा भंगिमाओं का सृजन कथक के सौन्दर्य में वृद्धि कारक होते है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. नाट्यशास्त्र–4/26 (आचार्य भरतमुनि) सम्पादक–श्री बाबुलाल शुक्ल शास्त्री 1984
2. कथक नृत्य–डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग (1960) पृ. क्र. 16
3. सौन्दर्य के तत्त्व–डॉ. कुमार विमल पृ.क्र. 42
4. कथक नृत्य शिक्षा प्रथम भाग– डॉ. पुरूदाधीच पृ.क्र. 02
5. सौन्दर्य के तत्त्व–डॉ. कुमार विमल पृ.क्र. 91
6. संगीत रत्नाकर–आचार्य शकृदेव (1/1/21)
7. सौन्दर्य–डॉ. राजेन्द्र बाजपेयी पृ.क्र. 89
8. पं. कार्तिक राम–रायगढ़ घराना
9. कथक अथारो की आरसी–डॉ. ज्योति बक्शी
10. पं. कार्तिक राम रायगढ़ घराना